८९: अनुभव क्रम

०७-०७-१३

अनुभव क्रम से होता है | इस धरती का इतिहास देखने पर पता चलता है कि सर्वप्रथम जब मानव अवतरित हुआ तब से जंगल में निवास किया | करते-करते जीवों के साथ संघर्ष किया | पहले से मानव के पास कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता रहा है | फलस्वरूप जीवों के साथ, उसमें भी दुष्ट जीवों के साथ, जो मानव को तंग करते हैं, ऐसे जीवों के साथ संघर्ष किया | उस समय में पत्ते के अलावा और कोई रास्ता नहीं रहा | सूखा पत्ता, गीला पत्ता के रूप में उपयोग किया | खाने के लिये मांसाहार, शाकाहार दोनों हुआ | जीवों में ये दोनों तरह का आहार है ही | अभी भी है | इसमें से किसी एक को अपनाया है | अपना करके मानव जीता रहा नर–नारी के रूप में | सन्तान प्राप्तिकी जंगल युग से ही शुरुआत है | शनैः शनैः पत्थर युग आया | पत्थर से जानवरों को मारने का, रहने के लिये जगह, लकड़ी का कोडर, पत्थर का गुफा को अपनाया ऐसा कल्पना किया जा सकता है | पत्थर से जानवरों के साथ संघर्ष किया | इसके बाद पत्थर के युग के बाद धातु का युग आ गया | तब तक विभिन्न नस्ल के आदमी देखने को मिला | धातु से बनी हुई चाकू, छुरी, तलवार का प्रयोग किया | इसके पश्चात बारूद युग आ गया | इसी के साथ साथ ग्राम युग, कबीला युग आ गया | कबीलाएं एकत्रित होकर संघर्ष करना चाहा | ग्रामवासी भी परस्पर ग्राम के साथ संघर्ष करना चाहा | संघर्ष का मानसिकता जंगल युग से ही रहा | धातु युग के बाद कृषि का कल्पना किया | कृषि के साथ पशुपालन भी रहा | अन्ततोगत्वा बारूद युग में जीवों का नियंत्रण हुआ | मानव बच गया |

मानव कृषि करना शुरू किया | घर बनाना शुरू किया | जंगल युग से छप्पर, उसके बाद बारूद युग के बाद मकान बनाना शुरू किया | गाँव का मतलब ही है मकान बनाकर रहने वाला जगह | इस क्रम में मानव विकास करता गया | इस क्रम में चलकर मिसाइल युग तक पहुंच गया | अब सोच रहा है, मानव इस धरती पर रहने योग्य नहीं रहा | सब मिलकर जीना आवश्यक हो गया | इसी क्रम में संस्थाएं उदय हुईं | इसी क्रम में विकल्प तैयार हुई | विकल्प का अध्ययन संस्थाएं कर रहा है | करते-करते अभी की स्थिति में तीन सस्थाएं विश्वव्यापी संस्थाएं हैं | अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के रूप में तीन संस्थाएं हैं | राष्ट्रीय संस्थाओं के रूप में न्यायपालिका तैयार हुआ है | न्याय नहीं मिला | अब सोच रहे हैं, विश्व संस्थाएं न्याय को पालें | अभी तक की विचारधारा के रूप में आदर्शवाद, भौतिकवाद ही हुआ | आदर्शवाद में न्याय का चाहत रहा | भौतिकवाद में नहीं रहा | भौतिकवाद में संघर्ष ही प्रधान रहा | मानव के साथ मानव का संघर्ष ही प्रधान रहा | जीव जानवर सब समाप्त हो गये | केवल मानव बचा है | मानव का संख्या बढा है | मानव का संख्या बढने पर, खाने की आवश्यकता बढी | खाने के क्रम में जंगल का नाश हुआ | जंगल में रहने वाले जानवरों का विनाश हुआ | घरेलू जानवरों का मांसाहार में ज्यादा उपयोग हुआ |

भेड़, बकरी के रूप में, मछली के रूप में मांसाहार का सेवन रहा | गाय को खाया, भैंस को खाया, सुअर को खाया | सब खाने के बाद भी भूख मिटा नहीं | गेहूं ,चावल को भी खाया | इस क्रम में मानव अपना शरीर पोषण, संरक्षण का भी बात हुई | विचारों के आधार पर विकल्प आ गया | विकल्प विधि से ही पता चलता है कि अनुभव क्रम से होता है | अभी विकल्प प्रस्ताव के रूप में है | कुछ लोगों के सम्मुख है | धीरे-धीरे शिक्षा क्रम में लोकव्यापीकरण होने की सम्भावना है | इसी आशा से मानव अनुभवमूलक विधि से जीना अपनाएगा, ऐसा मानकर प्रस्तुत किया है | अनुभवमूलक विधि से ही सोचने से न्याय,

समाधान, सत्य समझ में आता है | यही विकल्प है | समझ में आने का मतलब जीने से है | जीने का क्रम जंगल युग से रहा | पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में जीने का क्रम जंगल युग से रहा | अभी मानव न्यायपूर्वक जीना चाहता है, सर्वाधिक रूप में | इसी के लिये प्रस्ताव रखा है विकल्प का | विकल्प विधि से मानव अनुभव क्रम को पहचानता है | शरीर और जीवन की बात समझ में आता है | अनुभव का क्रम समझ में आता है | अनुभव क्रम में मानव अध्ययन करना शुरू किया | अध्ययन क्रम में, क्रम से चारों अवस्था के साथ जीने की आवश्यकता महसूस हुई | प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत विकल्प में इस बात को अच्छी तरह से समझाया है | चारों अवस्थाएं पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था हैं | ज्ञानावस्था में मानव गण्य है | मानव ही अनुभवमूलक विधि से जीने के योग्य है, क्योंकि ज्ञानावस्था की इकाई है |

इसी क्रम में चारों अवस्था के साथ संतुलन ही एकमात्र लक्ष्य है | इसे अच्छी तरह से विकल्प में प्रस्तुत किया है | अनुभव क्रम में मानव ज्ञानावस्था में होने का वैभव पीढ़ी से पीढ़ी में पहुंचने की सम्भावना है | इस क्रम में अनुभव एक बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है | अनुभव के बिना न्याय, धर्म, सत्य समझ में नहीं आता है | अनुभवमूलक विधि से ही न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता है | अनुभव के बिना न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता ही नहीं | अनुभव विधि से ही न्यायपूर्ण व्यवहार, समाधानपूर्ण विचार, अनुभवपूर्ण सत्य प्रमाणित होता है | यही प्रमाणित करने का क्रम है | आत्मा सहज परावर्तन क्रिया ही प्रामाणिकता है, इसीलिए | अध्ययन विधि में न्याय धर्म सत्य सहज अध्ययन है | न्याय धर्म सत्य अध्ययन, चिंतन ज्ञान अर्थात अवधारणा सहित नियम एवं न्याय पूर्वक जीना, बोध एवं समाधान पूर्वक जीना, सत्य पूर्वक जीने से अस्तित्व में अनुभव होता है, पुनह: इन्हें परम्परा में प्रमाणित करने का क्रम आ जाता है | व्यवस्था ऐसे ही बनी है | जागृति एक सघन कार्यक्रम है | अनुभव क्रम से ही होता है | न्याय, धर्म, सत्य के रूप में उपलब्धि व्यक्तिवाद से चलकर समाजवाद, अखण्ड समाजवाद के रूप में विचार, न्याय, धर्म, सत्य के रूप में व्यवहार प्रमाणित होना ही क्रम है | इसी क्रम में समाधान, समृद्धिपूर्वक परिवार; समाधान, समृद्धि, अभयतापूर्वक समाज;समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सम्पन्न व्यवस्था का अनुभव कर सकते हैं; प्रस्ताव के अनुसार, विकल्प के अनुसार | क्रम को छोड़कर जागृति नहीं है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)